NATIONAL SEMINAR ON

"APHELION GROWTH OF THE PUPIL TEACHERS THROUGH OPEN AMBIENCE IN TEACHER EDUCATION"

Sponsored by I.C.S.S.R., New Delhi

October 16-17, 2015

[Organized by Krishna Mahila Teachers Training College, Sisarma, Udaipur
A unit of Navodit Shiksha Samiti, Udaipur in collaboration with MLSU, Udaipur (Raj.)]

Technical Session –S- I

S. No.	Seminar Disgnation	Name of Participants	Post	College / Permanent Address
1	Key-note	Dr. Hemlata Talesra	Director, Prof.& Head	Smt. K. B. Dave College of Education, Pilvai (Dist. Mehsana) Gujarat & CCEAM Fellow & Indian Representative
2	S-I, Chair Person	Dr. M.P. Sharma	Director	Vidya Bhawan B.Ed. Colleges, Udaipur, (Raj.)
3	S-I, Speaker	Dr. Divya Prabha Nagar	Principal	Vidya Bhawan G.S. Teachers College, Udaipur, (Raj.)
4	S-I, Co-Speakar	Dr. Giriraj Bhojak	Asst. Professor	Dept. of Edu., Jain Vishva Bharati Institute, Ladnu (Raj.)
5	S-I, Co-Speaker	Dr. Manish Bhatnagar	Asst. Professor	Deptt. of Education, Jain Vishva Bharti Institue (Deemed University) Ladnun (Raj.) Pin. 341306
6	S-I, Repertoire	Dr. Adesh Bhatnagar	Principal	Indo American Institute, Balicha, Udaipur
7	S-I, Paper Reader	Dr. A.B. Pathak	Retd. Principal	Kabra B.Ed. College, Jodhpur, (Raj.)
8	S-I, Paper Reader	Dr. Mahesh Tiwari	Principal	Mewar Girls College of Teachers Training, Chittorgarh,
9	S-I, Paper Reader	Dr. Arvind Ashiya	Astt. Prof.	Vidya Bhawan G.S. Teachers College, Udaipur, (Raj.)
10	S-I, Paper Reader	Mr. Chandra Singh Bhati	Lecturer, Ph.D. Scholar-MLSU	S.S. Rathore T.T. College, Ajmer
11	S-I, Paper Reader	Mr. Jaydeep Mahar	Sr. Lecture	Saraswati Shikshak Prashikshak College, Mandsaur, M.P.
12	S-I, Paper Reader	Dr. Pragati Bhatnagar	Asst. Professor	Acharya Kalu Kanya Mahavidyalaya, Jain Vishva Bhart Institue (Deemed University) Ladnun (Raj.) Pin. 341306
13	S-I, Paper Reader	Dr. Madhu Upadhyay	Principal	Mahatma Gandhi B.Ed. College, Banswara
14	S-I, Paper Reader	Mrs. Nisha Sharma	Asst. Professor	Saraswati Shikshak Prashikshak College, Mandsaur, M.P.
15	S-I, Paper Reader	Tara Kumawat	Lecturer	V.B.G.T.E.S., Ramgiri
16	S-I, Paper Reader	Dr. Sarita Jain	Lecturer	V.B.G.T.E.S., Ramgiri
17	S-I, Paper Reader	Mrs. Sushma Intodia	Lecturer	V.B.G.T.E.S., Ramgiri
18	S-I, Paper Reader	Dr. Praveen Kumar Jain	Principal	Shree Mahaveer B.Ed College, Banswara (Raj.)

R.P. Sandhy

Surendra ji

अध्यापक शिक्षा एवं सामुदायिक विकास

डॉ. गिरिराज भोजक
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान

भारतीय समाज एवं संस्कृति अति प्राचीन है जिसके अंतर्गत समाहित मूल्यों ने संपूर्ण विश्व को समय–समय पर मार्गदर्शन प्रदान किया है। किसी भी देश की स्वर्णिम संस्कृति एवं आदर्श समाज की स्थापना में सदैव शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा एवं समाज का सम्बन्ध परस्पर अन्यानोश्रित है तथा दोनों ही इकाईयों में होने वाले सभी परिवर्तनों एवं नवाचारों का प्रभाव एक–दूसरे पर पड़ता है जिसका प्रत्यक्ष परिणाम संपूर्ण राष्ट्र विकास पर दृष्टिगोचर होता है।

समग्र राष्ट्र विकास की प्रमुख आधारभूत इकाई है विद्यार्थी का संपूर्ण वैज्ञानिक व्यक्तित्व विकास। एक कुशलतासम्पन्न, उत्पादक एवं विकासोन्मुखी नागरिक के निर्माण में एक अध्यापक की क्रियाशील व मुख्य भूमिका होती है। अध्यापक शिक्षा का संरचनात्मक एवं व्यावहारिक ढांचा जितना मजबूत होगा उतना ही हम एक शिक्षक प्रशिक्षणार्थी को आदर्श अध्यापक के रूप संपूर्ण 'सामाजिक एवं सामुदायिक विकास के नेतृत्वकर्त्ता' के रूप में विकसित कर पायेंगे। वर्तमान युग तकनीकी विकास एवं वैश्वीकरण से पूर्णतः प्रभावित है जिसके संदर्भ में हम सभी धनात्मक रूप से लाभान्वित हो रहे हैं परन्तु इनके व्यापक एवं तीव्र विकास ने आज समग्र समाज, समुदाय एवं राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों व समस्याओं को प्रस्तुत किय है जो कि निम्नलिखित हैं–

1. संस्कृति एवं मूल्यों का ह्रास
2. परंपरागत सामाजिक एवं सामुदायिक ढांचे का विघटन
3. शिक्षा का व्यावसायीकरण
4. समुदाय एवं शिक्षा की परस्परता में गिरावट
5. सामाजिक आधारभूत इकाईयों (परिवार, समूह, पड़ौस आदि) सम्बन्धी असंतुलन
6. व्यक्ति में बढ़ती आत्मकेन्द्रित विकास प्रवृत्ति

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप आज एक विद्यार्थी के नैतिक, सामाजिक एवं सामुदायिक विकास पर अन्य देशों की संस्कृति एवं मूल्यों का निरन्तर प्रभाव हो रहा है जिनके सभी घटकों को ऋणात्मक कहना अतिश्योक्ति होगी। भारतीय प्ररिदृश्य में एक शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जहां निरंतर तकनीकी विकास द्वारा अपने व्यावसायिक तथा रोजगारपरक कौशलों की अभिवृद्धि में संलग्न है वहीं उसकी 'स्वकेन्द्रित विकास' की भावना उसके अपेक्षित संतुलित व्यक्तित्व विकास के मार्ग में बाधक बन रही है। अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या के विविध घटकों द्वारा जिस प्रकार एक प्रशिक्षणार्थी के व्यावसायिक कौशल विकास पर बल दिया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप प्रशिक्षुओं को एक अपेक्षित रोजगार का साधन तो मिल जायेगा परंतु वे एक 'सामुदायिक नेतृत्वकर्त्ता' के रूप में संपूर्ण समाजिक व राष्ट्रीय विकास में अपना सक्रिय योगदान नहीं दे पायेंगे।

अध्यापक शिक्षा की नवीन द्विवर्षीय पाठ्यचर्या के विकास के संदर्भ में व्यावसायिक कौशल विकास के साथ सामुदायिक विकास के लिए निम्नलिखित सामाजिक व सामुदायिक समस्याओं के सम्बन्ध में कौशल चिन्तन होना चाहिए–

1. समाज में बढ़ता पारिवारिक विघटन
2. व्यक्ति का आत्मकेन्द्रित चिंतन
3. सहयोग, समन्वय तथा परस्परता के गुणों का निरंतर ह्रास
4. पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं से बढ़ता मानसिक असंतुलन
5. विविध मानसिक व सांवेगिक समस्याओं तथा तनाव, नैराश्य व कुण्ठा आदि द्वारा समग्र विकास पर नकारात्मक प्रभाव।

उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'द फैमिली एण्ड नेशन' में एक परिवार तथा समाज के आदर्श तथा संतुलित विकास को संपूर्ण राष्ट्र विकास का प्रमुख आधार बताया गया है। वर्तमान अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र की सर्वप्रमुख समस्या है कि सैद्धान्तिक रूप से पाठ्यचर्या को जितना वैज्ञानिक बनाने का कार्य हो रहा है उतना ही व्यावहारिक रूप से कक्षा–कक्ष, सामुदायिक कार्यक्रम तथा प्रायोगिक प्रशिक्षण गतिविधियों को संचालित करने का कार्य नहीं हो रहा है। विकास की बहती अविरल धारा में एक अध्यापक प्रशिक्षु की भूमिका केवल ज्ञान व अवबोध सम्बन्धी विषयगत योग्यताओं को आत्मसात करना नहीं है बल्कि अपेक्षा है कि वह एक मार्गदर्शक, परामर्शदाता, संगठनकर्त्ता, परिवर्तनकर्त्ता के रूप में एक विद्यार्थी तथा संपूर्ण समुदाय के लिए एक 'अकादमिक नेतृत्वकर्त्ता' के रूप में अपनी भूमिका निभाये।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने अध्यापक प्रशिक्षु में प्रमुख दस कौशलों के विकास की सिफारिश दी है–

1. सूक्ष्म चिंतन	2. सृजनात्मक चिंतन	3. निर्णयशीलता	4. समस्या समाधान	5. आन्य जागरूकता
6. प्रभावी संप्रेषण	7. परस्पर सम्बन्ध	8. स्वीकार्यता	9. तनाव प्रबंधन	10. संवेग प्रबंधन

उपर्युक्त कौशलों के विकास हेतु अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या, विविध सामुदायिक एवं कक्षागत गतिविधियों के सम्बन्ध में अपनाये जाने वाले नदाचार निम्नलिखित हैं–

1. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCFTE, 2009) की अनुपालना में बालकेन्द्रित, सहयोगात्मक, लचीली शैक्षिक गतिविधियों की आयोजना
2. नवाचारी विधियों व प्रविधियों द्वारा प्रशिक्षु की अधिकतम सहभागिता तय करना यथा परिचर्चा, संगोष्ठी, ब्रेन स्टॉर्मिंग, परिस्थिति विश्लेषण (Situation Analysis) केस स्टडी, समस्या समाधान आदि को समाज एवं समुदाय केन्द्रित बनाना
3. अन्तर अनुशासनात्मक (Interdisciplinary) विषयों, व्यक्तिशः, अधिगम परिस्थिति (Individualized learning route) तथा सामाजिक समस्याओं के वास्तविक प्रत्यक्षण हेतु सामुदायिक विकास, सेवा तथा जनजागरण कार्यक्रमों को पाठ्यसहगामी क्रियाओं में स्थान प्रदान करना
4. क्षेत्रीय सामुदायिक तथा सामाजिक समस्याओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण
5. गैर सरकारी संगठनों तथा सामुदायिक विकास सम्बन्धी संस्थाओं के कार्यक्रमों में सहभागिता हेतु संस्थानों के साथ सम्बन्धों की स्थापना
6. विशिष्ट सामुदायिक मुद्दों तथा समस्याओं के समाधान हेतु यथासंभव टॉक–शो, संगोष्ठी, शिविर, जागरूकता अभियान में प्रशिक्षुओं की प्रत्यक्ष सहभागिता
7. सामुदायिक विकास के क्षेत्रों में आवश्यक शोध कार्य, लेखन तथा प्रकाशन हेतु प्रशिक्षुओं को प्रोत्साहन प्रदान करना

सारांशतः अध्यापक शिक्षा के संरचनात्मक तथा व्यावहारिक पक्षों को इस दृष्टिकोण से नियोजित करने की आवश्यकता है कि एक अध्यापक प्रशिक्षु प्रशिक्षण के दौरान सामाजिक तथा सामुदायिक समस्याओं तथा उनसे सम्बन्धित समाधानों को व्यावहारिक रूप से अनुभव कर सके। इंटर्नशिप तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं को अधिकाधिक व्यावहारिक अनुभवपरक तथा कौशल निर्माण सम्बन्धी नियोजित करने पर प्रशिक्षु एक भावी अध्यापक के रूप में केवल विषयगत पारंगतता से ऊपर उठकर अपने क्षेत्र की आधारभूत समस्याओं के लिए चिंतन करते हुए उनके समाधान हेतु सक्रिय भूमिका निभा सकेगा। वर्तमान अध्यापक शिक्षा में राष्ट्र को अपेक्षा है कि वह 'सामुदायिक तथा अकादमिक नेतृत्वकर्ता' के रूप में प्रत्येक प्रशिक्षु को राष्ट्र निर्माण की सक्रिय इकाई के रूप में प्रस्तुत करे।